प्रभात

अमिया, साबुनदानी और कपड़े धोने का बुरुश

अमिया स्कूल में नाच प्रतियोगिता में भाग लेती ही जाती। और हर बार पुरस्कार दूसरी लड़कियों को मिलता जाता। उसे कभी कोई पुरस्कार नहीं मिला।

"पर पापा, अब की बार शायद मुझे पुरस्कार मिल जाए।" वह बोली।

"कैसे?" पापा ने कुर्सी पर बैठे-बैठे गर्दन को उसकी तरफ मोड़ते हुए कहा।

"मैंने मैम को एक चित्र बनाकर दिया है। देखते हैं मैम को वह कैसा लगता है?" अमिया दो-एक दिन से पुरस्कार के बारे में ही सोचती जा रही थी। और उसी के बारे में बातें भी करती थी, "पापा, क्या आपको कभी कोई प्राइज़ (पुरस्कार) मिला है?"

"मुझे?" पापा ने याद करते हुए कहा। "हाँ, बहुत बचपन में। तब मैं पाँचवीं में पढ़ता था।"

"किसमें मिला था?"

"अन्ताक्षरी में। पहले तहसील स्तर पर, फिर ज़िला स्तर पर।"

"क्या मिला था?" अमिया की दिलचस्पी बढ़ती ही जा रही थी।

"मैं बहुत छोटा था तब। तू खुद समझ ले पाँचवीं में मैं कैसा रहा होऊँगा। उस दिन मैं धुली हुई खाकी नेकर, नील दी हुई सफेद बुशर्ट, वो भी नेकर में दबाई हुई, पहनकर पुरस्कार लेने गया था। उस दिन मेरी कँघी मेरे पिता ने की थी।...

"पर पुरस्कार क्या मिला था?" अमिया जानने के लिए उतावली हो रही थी।

"तहसील स्तर के लिए तो साबुनदानी मिली थी ... और ...।" अमिया की हँसी छूट पड़ी। वो हँसते-हँसते बड़ी मुश्किल से बोली, "साबुनदानी ...!" लेकिन पापा पर उसके हँसने का कोई असर नहीं हो रहा था। वे बता रहे थे, "और ज़िला स्तर पर कपड़े धोने का बुरुश मिला था।"

"हो हो हो हो कपड़े धोने का बुरुश... ही ही ही ही साबुनदानी खी खी खी... बुरुश और साबुनदानी हो हो हो ... ये भी कोई प्राइज़ होते हैं।" अमिया हँस-हँसकर लोटपोट हो रही थी जबकि पापा को ज़रा भी हँसी नहीं आ रही थी। वे बचपन में मिले इन पुरस्कारों को लेकर काफी संजीदा थे।

"और आपने ये ले भी लिए?" अमिया सोच रही थी कि पाँचवीं में पढ़ने वाले पापा इन दोनों चीज़ों को हाथ में लेकर बहुत बुद्धू नज़र आ रहे होंगे। उसे मन ही मन दुख भी हो रहा था कि पापा का अच्छा-खासा मज़ाक उड़ा होगा। मगर उसकी हँसी भी नहीं रुक रही थी।

इधर पापा की बातें चलती ही जा रही थीं, "मैंने पुरस्कार के लिए रखी चीज़ों को मंच पर देखा। देखा और अपनी लाइन में बैठा-बैठा सोचने लगा यह गुलाबी साबुनदानी और कपड़े धोने का हरा बुरुश मुझे मिल जाए तो कितना अच्छा हो। और तब तो मैं पागल ही हो गया जब ये दोनों चीज़ें मुझे ही मिलीं। मैं इतना खुश था कि मन ही मन सोचने लगा, "मैं जो पाना चाहता था वह मुझे मिल गया है। अब मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। तब हमारे घर में साबुनदानी और बुरुश दोनों ही नहीं थे। साबुन को साबुनदानी में रखा देखकर मुझे गर्व होता था। और कपड़े धोने का बुरुश! वो तो कमाल ही था। बुरुश लगाते ही कपड़ों से सारा मैल निकल जाता था।"

"पापा की ये बातें सुनकर अमिया का हँसना कुछ कम हुआ। अब वह साबुनदानी और कपड़े धोने के बुरुश को गाने की तरह गा भी नहीं रही थी। जाने क्यूँ उसे लगा कि वह ऐसा करेगी तो पापा को बुरा लग सकता है।

उस बात को हुए कई दिन बीत चुके हैं। अब जब कभी पापा उसको किसी बात के लिए छेड़ते हैं तो वह भी कह देती है, "याद है? साबुनदानी और कपड़े धोने का बुरुश!" और दोनों हँस पड़ते हैं। चकमक